क्या इस्लाम एक कठोर धर्म है ?

الحمد لله والصلاة والسلام على رسول الله، وبعد:

आजकल “इस्लाम एक संतुलित (moderate) धर्म है” यह वाक्य बहुत प्रचलित हो गया है। यह बात सही भी है, क्योंकि इसका प्रमाण कुरआन, सुन्नत और विद्वानों के कथनों में मिलता है।

लेकिन समस्या तब पैदा होती है जब कुछ लोग इस वाक्य का गलत इस्तेमाल करते हैं—वे इस्लामी नियमों को कमजोर करने और अपनी इच्छा के अनुसार बदलने के लिए “moderation” का सहारा लेते हैं।

इसलिए इस वाक्य के दो इस्तेमाल हैं:

1. **सही (शरीअत के अनुसार)**
2. **गलत (मनमाना और भ्रामक)**

उम्मत का संतुलन (Moderation of Ummah)

अल्लाह तआला फरमाते हैं :

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا
“और इसी तरह हमने तुम्हें एक संतुलित उम्मत बनाया।”
[क़ुरआन, सूरह अल-बक़रह, आयत-143]

इसका मतलब यह है कि मुसलमान न अति करते हैं और न कमी करते हैं, बल्कि बीच का रास्ता अपनाते हैं।

इमाम तबरी (रह.) फरमाते हैं :
इस उम्मत को “मध्यम” इसलिए कहा गया क्योंकि यह न ईसाइयों की तरह अति करती है और न यहूदियों की तरह कमी करती है। [तफ़सीर अत-तबरी 3/142]

संतुलन ही सबसे अच्छा रास्ता

इब्न अल्-क़य्यिम (रह.) फरमाते हैं:
सबसे अच्छे लोग वे हैं जो **दोनों अतियों के बीच** रहते हैं। [इग़ाथत अल-लहफान 1/182]

सीधा रास्ता (Straight Path)

मुसलमान हर नमाज़ में यह दुआ करता है कि उसे **सीधे और संतुलित रास्ते** पर चलाया जाए :

اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ
صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

"हमें सीधा रास्ता दिखा — उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इनाम किया, न कि उनका जिन पर तेरा ग़ुस्सा हुआ, और न ही उनका जो भटक गए।"

[अल्-क़ुरआन, सूरह अल्-फ़ातिहा, आयत :6-7]

ज़कात में भी संतुलन

ज़कता का माल जब वसुला जाए तो न बहुत अच्छा लिया जाए, न बहुत खराब—बल्कि बीच का लिया जाए जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

إِيَّاكَ وَكَرَائِمَ أَمْوَالِهِمْ
"उनके माल की सबसे अच्छी चीज़ लेने से बचो।"
[सहीह अल्-बुख़ारी, हदीस- 1425, सहीह मुस्लिम, हदीस- 130]

खर्च में संतुलन : न फिजूलखर्ची, न कंजूसी—बल्कि संतुलन करना

अल्लाह तआला फरमाते हैं :

وَالَّذِينَ إِذَا أَنفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَٰلِكَ قَوَامًا

"और वे लोग जब खर्च करते हैं तो न फिजूलखर्ची करते हैं और न कंजूसी, बल्कि दोनों के बीच संतुलित तरीका अपनाते हैं।" [अल्-क़ुरआन, सूरह अल्-फ़ुरक़ान,आयत-67]

दीन (धर्म) में "मध्यम मार्ग" का मतलब है :
अति (ज्यादा सख्ती) और कमी (लापरवाही) के बीच का रास्ता अपनाना।

यह लागू होता है :

- अक़ीदा (विश्वास) में
- इबादत (उपासना) में
- और व्यवहारिक जीवन में

लोगों के तीन हाल होते हैं:

1. कुछ लोग हद से आगे बढ़ जाते हैं (अति)
2. कुछ लोग कमी कर देते हैं (लापरवाही)
3. और सबसे अच्छा रास्ता बीच का है

असली नियम यह है कि :

जो तरीका शरीअत (कुरआन और सुन्नत) के अनुसार हो वही सही "मध्यम मार्ग" है। और जो इसके खिलाफ हो, उसे "moderation" यानि **मध्यम मार्ग** नहीं कहा जा सकता।

इस्लाम का मूल सिद्धांत: आसानी, न कि कठोरता

नीचे की आयत साफ बताती है कि इस्लाम का मूल उद्देश्य इंसान पर बोझ डालना नहीं, बल्कि आसानी देना है।

अल्लाह तआला फरमाते हैं :

[**يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ**] سورة البقرة 185

"अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है, कठिनाई नहीं चाहता।"

नबी ﷺ की शिक्षा: धर्म को आसान बनाओ

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

[**إِنَّ الدِّينَ يُسْرٌ**] صحيح البخاري 39

"निस्संदेह धर्म आसान है।"

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दूसरी रिवायत में फरमाया :

يَسِّرُوا وَلَا تُعَسِّرُوا
"आसानी करो, कठिनाई मत पैदा करो।" [सहीह अल्-बुख़ारी, हदीस- 69]

इस्लाम में कठोरता की मनाही है

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

هَلَكَ الْمُتَنَطِّعُونَ
"हद से ज्यादा सख्ती करने वाले लोग बर्बाद हो गए।" [सहीह मुस्लिम, हदीस-2670]

इसका मतलब है कि जो लोग खुद ही धर्म को जरूरत से ज्यादा सख्त बना देते हैं, वे गलत रास्ते पर हैं।

शरियत में रुख़्सत (छूट) का सिद्धांत

इस्लाम में हर मुश्किल स्थिति के लिए आसानी दी गई है :

- सफर में नमाज़ क़सर करना
- बीमार होने पर रोज़ा छोड़ना

- पानी न मिलने पर तयम्मुम

अल्लाह तआला फरमाते हैं :

مَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ
"अल्लाह ने दीन में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी।" [क़ुरआन, सूरह हज्ज, आयत-78]

उलमा (जैसे इब्न तैमिय्या रहि. और इब्न अल्-क़ैय्यिम रहि.) का कहना है :

- इस्लाम अपने असल में **मध्यम (balanced)** है
- सख्ती दो तरह की होती है :
    1. **अल्लाह के हुक्म पर चलना** → यह सख्ती नहीं, बल्कि अनुशासन है
    2. **खुद से ज्यादा नियम बना लेना** → यह निंदनीय कठोरता है

इसलिए हर नियम को "कठोरता" कहना सही नहीं है ; यह इंसान की नजर का फर्क हो सकता है।

शब्द का गलत इस्तेमाल: "Moderation" के नाम पर धर्म बदलना

कुछ लोग "moderation" का मतलब यह लेते हैं कि :

- सुन्नत और बिदअत के बीच समझौता
- तौहीद और शिर्क के बीच रास्ता
- इस्लाम और कुफ्र के बीच मेल जो कि पूरी तरह गलत है।

अल्लाह तआला क़ुरआन में फरमाते हैं :

وَلَنْ تَرْضَىٰ عَنكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَىٰ حَتَّىٰ تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ

"न तो यहूदी तुमसे कभी खुश होंगे और न ही ईसाई, जब तक कि तुम उनके रास्ते का पालन न करो।"
[अल्-क़ुरआन, सूरह अल्-बक़रह, आयत-120]

यानी अगर आप अपने धर्म में समझौता करेंगे, तब भी दूसरे लोग आपसे खुश नहीं होंगे।

सही समझ क्या है?

अल्-सम'आनी (रह.) कहते हैं:
बीच का रास्ता तभी सही है जब वह **शरीअत के अनुसार हो**, हर हाल में नहीं। [कवातिअ अल-अदिल्लह 5/256]

शैख मुहम्मद बिन् सालेह अल्-उसैमिन (रह.) की व्याख्या

moderation का मतलब है :

- न अति करना
- न लापरवाही करना

✔ अक़ीदा (belief) में
✔ इबादत में
✔ जीवन के हर पहलू में

जो कुरआन और सुन्नत के अनुसार है वही असली "मध्यम मार्ग" है।

ऊपर की आयतों, हदीस और उलामा के कथन से यह साफ तौर पर मालूम होता है कि इस्लाम :

- आसान है
- प्राकृतिक (fitrah) के अनुसार है
- जरूरत पर छूट देता है

सख़्ती कहाँ आती है ?

- जब लोग खुद से धर्म को कठिन बना लें
- या नियमों को गलत तरीके से पेश करें

इसलिए सही बात यह है कि **"इस्लाम सख़्त धर्म नहीं, बल्कि संतुलित और न्यायपूर्ण धर्म है।"**

इस्लाम वास्तव में एक **संतुलित धर्म** है
यह अति और कमी—दोनों से बचाता है
लेकिन "moderation" का मतलब यह नहीं कि :

- सही और गलत को मिलाया जाए
- या धर्म में समझौता किया जाए

असली संतुलन वही है जो **कुरआन और सुन्नत के अनुसार हो।**

और अल्लाह ही बेहतर इल्म रख़ने वाला है।